स्वयं से ही प्रश्न

(कविता-संग्रह)

'साथी' जहानवी

(अजय कुमार शर्मा)

समर प्रकाशन

समर प्रकाशन
106, प्रथम तल, कान्हा एनक्लेव 52-54
CD ब्लॉक, दादूदयाल नगर, जयपुर-302029
दूरभाष : 0141-2213700, 98290-18087
ई-मेल : samarprakashan@gmail.com

कॉपीराइट © अजय कुमार शर्मा

प्रथम संस्करण : 2020

ISBN :

कम्प्यूटर ग्राफिक्स : बनवारी कुमावत 'राज'

आवरण संयोजन : समर टीम

मुद्रक
तरु ऑफसेट, जयपुर

मूल्य : ₹ 120/-

SWAYAM SE HI PRASHNA (POETRY) by 'Sathi' Jahanavee (Ajay Kumar Sharma)

धरती माँ,

हर उस जीव,

दरिया व शजर को

जिसकी वज़ह से यह कायनात

खूबसूरत, महफ़ूज़ व खुशहाली से आबाद है

और

माँ की निस्वार्थ

ममता, करुणा, स्नेह,

वात्सल्य और इन्सानियत

जो किसी भी मज़हब, धन दौलत

लोभ लालच और दीनो ईमान से परे है

अनुक्रम

मानव	11
सभ्य मानव	14
मालूम है कि	17
पानी में रिश्ते	21
बेबस-बेजान	29
कम से कम	32
क्रोध	35
शोषण	39
दासता	42
वृक्ष में जीवन	46
पराजित वीर	49
नादान इन्सान	52
रुपये के रूप : एक	55
रुपये के रूप : दो	58
मानसिक उत्पीड़न	61
वरदान	64
माँ की महिमा : एक	66
माँ की महिमा : दो	69
स्वयं से ही प्रश्न : एक	72
स्वयं से ही प्रश्न : दो	74
दोष	76
संस्कृति	79
गृहस्थ जीवन	82
यह कैसा डर : एक	85
यह कैसा डर : दो	88
यह कैसा डर : तीन	90
यह कैसा डर : चार	92
यह कैसा डर : पाँच	94
यह कैसा डर : छह	95

मेरी कलम से मेरे ख़यालात

पूर्व में तीन बार में एक साथ पाँच, छह और सात, कुल 18 काव्य संग्रहों के विमोचन के बाद अब एक ग़ज़ल संग्रह 'ख़ुद को बहुआयें', दो रूमानियत मुक्तक संग्रह 'जंजीरों में हवा', 'अज्ञातवास', ग्यारह छन्द मुक्त कविता संग्रह 'इलाज ही बीमार', 'दो मिनट का मौन', 'एकलव्य का अँगूठा', 'जीवन ही जेल', 'चुल्लू भर पानी में', 'गिरेबान में झाँक कर', 'रोटी में भूख', 'सुसाइड नोट', 'लॉक डाउन', 'भगवान भी मालिक नहीं', 'स्वयं से ही प्रश्न' एक साथ प्रकाशित कराने की ओर अग्रसर हूँ।

लिखना और पढ़ना मेरे लिये एक नियमित दैनिक प्रक्रिया है इसलिये इतना कुछ लिखने का मुश्क़िल काम सहजता और सरलता से मेरे लिये बहुत आसान रहता है। लिखने के लिये मुझे कोई विशेष मेहनत नहीं करनी पड़ती। नियमित दैनिक दिनचर्या में जो पढ़ता, देखता, सुनता, समझता और सहन करता हूँ उसको ही कुछ अलग संवेदनशील तरह से सोच कर लिखना ही मेरे लिये एक रचना कर्म है। जो कभी ग़ज़ल में तो कभी मुक्तक तो कभी कविता के रूप में आकार लेकर साकार होता है। रचनाओं की विषय वस्तु में अक्सर संवेदनशील करुणा के साथ व्यंग्य होता है। क्योंकि:-

मैं जब ख़ुद के भीतर जाता हूँ
तब तो मैं ख़ुद भी तर जाता हूँ
ख़ुद ही ख़ुद को लायक समझ
मुश्क़िल भी आसाँ कर जाता हूँ

मुझे साहित्य की किसी भी विद्या की कोई विशेष जानकारी नहीं है इसलिये मैं अपने आपको साहित्यकार नहीं मानकर एक मेहनती और ईमानदार रचनाकर्मी मानता हूँ। इसलिये इन रचनाओं को व्याकरण के दृष्टिकोण से परखना उचित नहीं होगा। क्योंकि:-

मैं तो वैसा भी नहीं, मैं तो उनके जैसा भी नहीं
मैं जैसा भी हूँ वैसा ख़ुद को हाज़िर कर रहा हूँ

इन काव्य संग्रहों की रचनायें रहस्य और छायावाद में न होकर इन रचनाओं की विषयवस्तु, सोच और शब्दों का चयन इस प्रकार किया गया है कि स्पष्टवादिता से समाज का हर वर्ग, किसी भी उम्र का इन्सान इन रचनाओं को आसानी से समझ ले और उसको अपने अहसास और जज़्बात, ख़्वाब और ख़याल इन रचनाओं में मिले क्योंकि इन रचनाओं की विषय वस्तु व्यक्तिगत नहीं होकर समग्र समाज का चिन्तन और मनन का दृष्टिकोण है। क्योंकि:-

जिसमें मिला उसी रंग का हो गया
पानी का यही रंग तो हिन्दुस्तानी है

बहुत कुछ ऐसा होता है जो आँखों ने देख तो लिया, नज़रों में आकार, साकार भी हो गया, अहसास और महसूस भी कर लिया मगर कहने और लिखने के लिये शब्द नहीं होते। वैसे भी बहुत कुछ ऐसा भी लिखने में आ जाता है जो कल्पनाओं से परे की सच्चाई होते हैं। कई बार सामान्य सी विषय वस्तु पर भी बहुत कुछ बहुत अच्छा लिखने में आ जाता है तो कई बार बहुत अच्छी विषय वस्तु पर भी कुछ भी लिखने में नहीं आता है। कुछ भी नहीं लिख पाना या बहुत कुछ लिख जाना यह सब मनोस्थिति पर निर्भर करता है। कुछ तहरीरें पत्थरों पर लिखी हुई तहरीर जैसी होती है जो समय के साथ धूमिल होकर मिट जाती हैं मगर कुछ तहरीरें दिलो दिमाग़ में असर कर जाती हैं वो लिखी हुई नहीं होकर भी कभी नहीं मिटती। क्योंकि:-

आँखों के पास कहने को ज़ुबान नहीं
ज़ुबान के पास आँखों के बयान नहीं
न तो कानों सुनी और न आँखों देखी
कोई सच दिले आवाज़ के समान नहीं

इन रचनाओं में सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, मानसिक राजनैतिक और सरकारी विसंगतियों, कुरीतियों, जातिवाद, छुआछूत, लिंग भेद, क़ानून व्यवस्था, ख़ुदग़र्ज़ी, बेईमानी, चालाकी, मक़्क़ारी, ज़ुल्मो सितम, अपराध, बेरोजगारी, बनावटी रिश्ते, ईर्ष्या, रंजिश, नफ़रत, धार्मिक उन्माद, देश द्रोह, आंतकवाद, चोरी, हत्या, जमाखोरी, मुनाफाखोरी, रिश्वत, बालश्रम, यौन शौषण इत्यादि बुराईयों पर आसान

शब्दों और सामान्य सोच के साथ व्यंग्य करके आम आदमी को समझाने की कोशिश की गई है। क्योंकि:-

जब ज़ुबान से लफ़्ज ख़ामोश हो जाये
ख़ामोश निगाहों का फिर आवाज़ होना

मैं हर उस जीव जन्तु और हर उस जर्रे-जर्रे का बहुत आभारी हूँ जो मेरी इन संवेदनशील रचनाओं की विषय वस्तु बने हैं। उम्मीद है कि आपको ये रचनायें पसन्द आयेंगी। आशा ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्वास है कि आप अपने अनमोल विचारों से इस तुच्छ रचनाकर्मी को अवश्य अवगत करायेंगे। ताकि भविष्य में इन सुझावों पर ध्यान दिया जा सके। इन रचनाओं से अगर किसी का तन-मन, दिलो दिमाग़ आहत होता हैं तो मैं इसके लिये अग्रिम क्षमा प्रार्थी हूँ। क्योंकि:-

वैसे तो मैं चलायमान समय हूँ 'साथी'
हँसते और हँसाते गुज़रे तो आसान हूँ

इन रचनाओं को काव्य संग्रह के लायक बनाने में जो अनमोल सहयोग श्री भगवत सिंह जादौन 'मयंक', श्री भगवती प्रसाद पंचौली और श्री शम्भू दयाल विजय ने किया है उसके लिये मैं उनका बहुत-बहुत आभारी हूँ। इस मुक्तक के साथ अपनी लेखनी को विराम देता हूँ।

ज़माने ने पाग़ल समझ कर खारिज़ कर दिया
उनके पाग़लपन ने ही उन्हें वाज़िब कर दिया
इल्म व हुनर का एक वही तो बेताज बादशाह
जिसने वास्ते इल्म अपने को जाहिल कर दिया

तहेदिल से आपका अपना

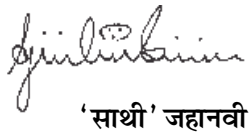

'साथी' जहानवी
(अजय कुमार शर्मा)

मानव

युग बदल गये
सदियाँ गुज़र गई
देश, धर्म, जाति, विरासत
इबादत, उपासना स्थल
सभ्यता, संस्कृति, भाषायें
सोच और समझ, खान-पान
रहन-सहन, धरोहर, मुद्रायें
ज़मीन की सीमायें भी बदल गई,
नहीं बदले तो सिर्फ़
रिश्तों के अहसास
और चाहत के जज़्बात,
उपचार बदल गये
मगर रोग नहीं बदले,
शरीर के अंगों की
प्राकृतिक क्रियायें हँसाना
मुस्कुराना, रोना, देखना
सुनना, बोलना, चलना
दिल का धड़कना नहीं बदले,
हवा-पानी, दिन और रात
चाँद-सूरज, प्रकृति नहीं बदली,
मानवता, ममता, करुणा
सुख-दुःख, हँसी-मजाक नहीं बदले

समय, काल
और परिस्थितियों से
मानव के स्वार्थ से
जो कुछ भी बदले
वो स्थाई और
प्राकृतिक नहीं थे,
जो नहीं बदले
इन्सान लाख चाहकर
और कोशिशें करके भी
उनको बदल नहीं पाया,
इन्सान विवश
और परास्त हो गया उनसे
जिनको बदल नहीं पाया,
बहुत कुछ बदलने की
तमाम कोशिशों के बावजूद भी
आख़िर में हम
दो हाथ-पैर का जीव
मानव ही तो रहे

मानव ही प्राकृतिक
और स्थाई है
भले ही उसे
देश और धर्म से
कोई सा भी नाम दे दो,
आदि-अनादि काल से
आज तक मानव
बहुत कुछ बदल कर भी
मानव ही रहा

जो कि यही सच है,
हम चाहे कुछ भी
सोच और समझ ले
फिर भी हम सब मानव होकर
सिर्फ़ और सिर्फ़ मानव ही हैं
अगर कुछ और हैं
तो स्वार्थ में सिर्फ़ दानव है।

सभ्य मानव

कितने नर-नारियों
पुत्र-पुत्रियों, माता-पिताओं
सास-बहुओं, भाई-बहिनों
मित्र-शत्रुओं, पति-पत्नियों
देवरानी-जेठानियों, ननद-भौजाई
जनता-सरकारें, पड़ौसी-रिश्तेदारों
राजा-प्रजा, गुरु-शिष्यों,संत-फ़कीरों
सलाहकार-व्यापारियों, मालिक-नौकर

इन सब में, आप और हमने
सदियों से व्यवहारिक जीवन में
कितना कुछ सीखा, सोचा-समझा
और अमल किया धार्मिक, सामाजिक
पारिवारिक ग्रंथों और धारावाहिकों से,
या सिर्फ़ हमने उपदेश ही दिये
एक दूसरे को बिना अमल किये

क्या हम अच्छे चाल-चलन
रहन-सहन से सभ्य-संस्कारी
मेहनती-ईमानदार, देश भक्त
और सच्चे नागरिक बन पाये

आशावादी सकारात्मक इन्सान
कहते कि बहुत कुछ सीखा
तब ही तो यह दुनिया सुसंस्कृत
महफूज़ और ख़ुशहाली से आबाद है
वर्ना यह साधन-सम्पन्न दुनिया
कभी की तबाही से नष्ट हो जाती

भाई-भाई ख़ून के प्यासे
बाप ही बेटी की अस्मत का लुटेरा
परिवारजनों में मनमुटाव और कलह
इन्सानों में ख़ुदगर्ज़ी की सोच
रक्त रंजित नफ़रत की आग
अराजकता, अपराध, बेईमानी
देशद्रोह, आतंकवाद, जातिवाद
चोरी, झूठ, चालाकी, मक्कारी
मोहमाया, कर चोरी, रिश्वत
जानलेवा मिलावट, भ्रटाचार
यतीम खानों में माता-पिता
करोड़ो इन्सानों की भूख से
मौत और फुटपाथ पर बसर
प्रकृति का शोषण से दोहन
बदचलन और बदज़ुबान बच्चे

क्या हमने
यही सब कुछ सीखा है
क्या हमारी दुनिया इसी तरह से
सुरक्षित, संस्कारी और सम्पन्न है

क्या इन सबसे
आज का सभ्य इन्सान
नैतिक चरित्र के पतन से
हैवान और शैतान नहीं है।

मालूम है कि

शिक्षा

हर शिक्षक को
यह मालूम होता है कि
किसी को ग़लत शिक्षा देना
कितना बड़ा गुनाह होता है
ग़लत शिक्षा से किसी का भी
सारा जीवन तबाह हो जाता है

बेटी

हर औरत जानती है कि
अपनों को छोड़ने का दर्द
और विवशता क्या होती है
सारा का सारा जीवन
एक पल में पराया हो जाता है
इसलिये हर एक माँ
हर वक़्त अपनी बेटी को
समझाती रहती है कि
सुसराल ही उसका परिवार होता है

भाईचारा

हर पिता जानता है कि
परिवार टूटने और बंटने का

दर्द और ग़म क्या होता है
माँ के दूध में खटास आ जाती है
ख़ून के रिश्तों में भाई-भाई
जान के दुश्मन हो जाते हैं
इसलिये हर पिता अपने बेटों को
मिल जुलकर सहनशीलता
भाईचारे और संतुष्टि से
रहने के लिये समझाता है

नशा

हर एक नशा करने वाले को
यह मालूम होता है कि
किसी भी प्रकार का
नशा करने से इन्सान
शारीरिक, मानसिक, आर्थिक
रूप से तबाह हो जाता है
इसलिये वह सबसे कहता है कि
कितने भी बुरे हालात तो
किसी भी हाल में नशा मत करना
दुख, दर्द और ग़मों का
परिवार और दोस्तों की सलाह से
हर समस्या का समाधान हो जाता है

जुआ

हर एक जुआ खेलने वाले को
यह मालूम होता है की
जुआं खेलना कितनी बुरी बात है
इन्सान धन-संपत्ति गवांकर

आर्थिक रुप से कर्ज़दार होकर
आर्थिक और मानसिक रुप से
बर्बाद होकर तबाह हो जाता है
परिवार का मान-सम्मान
मिट्टी में मिल जाता है
परिवार दाने-दाने के लिये
दूसरों का मोहताज हो जाता है

मेहनत और ईमानदारी

भीख माँगकर असहाय
ग़रीब, अपंग
और बुज़ुर्ग को भी
यह मालूम होता है कि
भीख माँगकर गुज़ारा करना
कितनी बड़ी शर्म की बात है
भीख माँगना तो ज़लालत से
ज़लील और शर्मसार होकर
बेमौत मरने से भी बदतर है
तौहीन और ज़लालत
बर्दाश्त करनी पड़ती है
मान-सम्मान, स्वाभिमान
और इज़्ज़त ख़त्म हो जाती है
इसलिये वह अपनी संतान सहित
सबको मेहनत और ईमानदारी से
रोजी-रोटी कमाने की
गुज़ारिश करता
और सलाह देता है

बचत

तंगहाली और बदहाली से
जीने वाले ग़रीब इन्सान को भी
यह मालूम होता है कि
दौलत ख़ुदा तो नहीं
मगर ख़ुदा से कम भी नहीं होती
बेहद ज़रूरी पारिवारिक
और सामाजिक ज़रूरतों को
समान्य और साधारण रूप से
पूरा करने के लिये भी
मान-सम्मान और स्वाभिमान को
बेचना या गिरवी रखना पड़ता है
इसलिये बुरे वक़्त के लिये
हर हाल में थोड़ी बहुत
बचत करने की सलाह देता है
क्योंकि मुसीबत के बुरे वक़्त में
अपनी बचत ही काम आती है।

पानी में रिश्ते

सर्व सुलभ
नि:शुल्क पानी
दूध और ख़ून के
स्वाभाविक और
प्राकृतिक रिश्ते हैं

पानी का
मटमैला होना
मन से मेले
रिश्तों में
ख़ुदगर्ज़ी की सोच है

मटके का फूटना
रिश्तों का
बिना वजह
टूटना है

ज़मीन का
पानी को सोखना
रिश्तों की इज़्ज़त
और गरिमा को
ज़माने से बचाना है

मटके में पानी
निर्मल और शीतल
वैसे ही आत्मीयता के
आँचल में रिश्ते
निश्छल और पवित्र हैं

पक्के फ़र्श पर
पानी का
फैलना
रिश्तों का
बेआबरू होना है

पानी का
'प्यूरीफायर' से
साफ़ होना
रिश्तों में
दिखावे का छलावा है

बोतल में
बंद पानी
बनावट से
रिश्ता
बिकाऊ है
पानी का
सूख जाना
रिश्तों का
अजनबी होकर
बेमौत मरना है

पानी का
भाप बन जाना
रिश्तों में
विरह की अग्नि से
तड़पकर जुदाई है

पानी का
काली घटा का
बादल होना
बिछड़े रिश्तों में
मिलन की आस है

पानी का
बारिश बनकर
बरसना
बिछड़े रिश्तों का
मधुर मिलन है

पानी में
शर्बत
रिश्तों में
मधुरता की
मिठास है

पानी में
चाय-कॉफी
रिश्तों में मुलाकात की
गर्मजोशी है

पानी में
प्यास
रिश्तों में
मिलन की
बेक़रारी है

पानी में
शराब होना
रिश्तों में
मस्ती की
मदहोशी है

पानी का
ज़हरीला होना
रिश्तों में
ईर्ष्या-रंजिश
और नफ़रत है

पानी का
सतरंगी होना
रिश्तों में उत्साह
और उमंग है

पानी का
जीवन होना
रिश्तों के संग
ताउम्र रहकर
जीना-मरना है

पानी का
चरणामृत होना
रिश्ते पूजनीय
आदरणीय
और सम्मानित है

हथेली में
पानी से शपथ
रिश्तों में
सौगंध से
वचनों का बंधन है

पानी में
गंगाजल
रिश्तों में
पवित्रता का
विश्वास है

पानी में
गंगा स्नान
रिश्तों में
ग़लतियों का
प्रायश्चित है

पानी में
तीर्थ यात्रा
रिश्तों में
धर्म और अध्यात्म है

पानी में
साधना
रिश्तों में
त्याग और
तपस्या है

पानी में
एक तिनके
जैसा सहारा
रिश्तों को टूटने से
बचाने का संघर्ष है

पानी में
शांत लहरें
रिश्तों का
मधुर और
सुहावना सफ़र है

पानी में
आँधी-तूफ़ान
रिश्तों में
कलह से
लड़ाई-झगड़े हैं

पानी में आग
रिश्तों में
अनहोनी
घटना है

पानी में दीवार
रिश्तों में
नामुमकिन भी
मुमकिन है

पानी में
संस्कार
रिश्तों में
रीति-रिवाज से
सभ्यता है

पानी में
मौसम
रिश्तों में
अनुकूलता से
नवीनता है

पानी में
रवानी
रिश्तों में
सम्बंधों का
संचार है

पानी में
धर्म
रिश्तों में
कर्तव्य से
दीनो-ईमान है

पानी का
अनुचित संग्रह
रिश्तों में
मोहमाया से
सांसारिक स्वार्थ है

पानी का
निस्वार्थ दान
रिश्तों में
मोहमाया से
सांसारिक मोक्ष है।

बेबस-बेजान

मौत के साये में
दूर-दूर तक फैला
डर का अंधकार
आख़री वक़्त में
खाक करने को
अपने भी नहीं है तैयार
मौत बेबस
ज़िन्दगी लाचार
जीना हुआ दुश्वार

ज़िन्दगी
घरों में कैद
मौत का आंतक
गलियों में आज़ाद,
जिस भी नाव में बैठो
उसी में छेद
मौत के समंदर में
कोई भी नहीं है तैराक
मौत के आगोश में
समाना ही होगा
अब तो बिना पतवार

घर सुनसान
गलियाँ वीरान
शहर श्मशान
बेबस जीवन
मौत के समान,
शिकार अंजान
और गुमनाम
मुश्किल है पकड़ना
बिना पहचान,
शिकारी का
मचान पर बैठने से
फिर कैसे समाधान,
बिना विधान के
कैसे हो निधान,
जीवन के जंगल में तो
खरपतवार से
व्यवधान ही व्यवधान

घर से बेघर
दो वक़्त की
रोटी में दर-दर,
बिना रहबर
मंजिल का सफ़र
धूप में बिना चप्पल
पैरों में काँटे-कंकर
राह में लुटेरे
इंसानियत में
कलंक के अँधेरे

जान हथेली पर
फिरते है मारे-मारे

दुनिया
इन्सान के बिना
बेबस-बेजान
पशु-पक्षी
देखकर दुनिया
हैरान-परेशान।

कम से कम

भले की हम
कितने भी नास्तिक
क्यों नहीं हो
फिर भी किसी की
आस्था और भक्ति की
भावना को ठेस तो
कम से कम नहीं पहुँचाये

अगर हम
किसी के लिये
सद्भावना और सद्विचार
नहीं रखते हो
तो कम से कम
षड्यन्त्र से शतरंज की
चालें तो नहीं चले

लाख कोशिशों के
बावजूद भी जिन्हें
नींद नहीं आती हैं
अगर हम उन्हें
चैन की नींद
नहीं सुला सकते

तो कम से कम
हमारा यह फ़र्ज़
बनता हैं कि
हम किसी सोये हुये
इन्सान को नहीं जगाये
या ऐसे हालात
पैदा नहीं करें कि
उनकी नींद हराम हो जाये

अगर हम
हमारे समय का
मूल्य नहीं समझते हैं
जबकि इस संसार में
सबसे अधिक मूल्यवान
समय ही होता है
जब हम किसी को
समय नहीं देते हैं
तो कम से कम
हमारा यह फ़र्ज़
बनता है कि
उसके समय को
जान-बूझकर
बेकार तो नहीं करें

अगर हम
साहित्य नहीं पढ़ते
या हमें अच्छे
साहित्य की

समझ नहीं हैं
या फिर हम
अच्छा साहित्य
रच नहीं सकते
तो हमारा
यह फ़र्ज़ बनता है कि
सहित्य पढ़ने
और रचने वाले की
बिना सिर पैर की बातों से
कम से कम
उनकी आलोचना तो नहीं करें
सद्भावना और सद्विचारों से
समालोचना ज़रूर करें

अगर हम
समाज सुधार के लिये
समाज सेवा का
कोई भी काम नहीं करते
या सहयोग नहीं करते
तो हमारा यह फ़र्ज़
बनता हैं कि
निस्वार्थ भाव से
जो समाज की
सेवा कर रहे हैं
कम से कम उन्हें
नाजायज़ परेशान तो नहीं करें।

क्रोध

क्रोध
विकास भी
विनाश भी
क्रोध
सकारात्मक
तो सृजन
क्रोध
नकारात्मक
तो विध्वंस

क्रोध
शक्तिहीन
हमेशा पराजित
जलालत से
शर्मसार
क्रोध
शक्तिशाली
विजय से वीरता

क्रोध
सज़ा तो नहीं
समर्थता से भी

क्रोध
दया और क्षमा
क्षमा वीरस्य भूषणं

क्रोध में
होश खोना
नादानी से
परेशानी
क्रोध वश में
सतर्कता से
सावधानी

अनहोनी में
क्रोध नहीं
परम ज्ञानी
होनी में
थोड़ी कुछ
नहीं होनी
परेशानी से
अज्ञानी

अतिक्रमण
अराजकता और अपराध
क्रोध के मानी
समर्पण
सदाचार
सद्भाव में
क्रोध बेमानी

नादानी में
क्रोध से
शर्म से
पानी-पानी
सोच-समझ में
क्रोध की नहीं
कोई भी निशानी

क्रोध में
ऊष्मा
जैसे काम में लो
वैसी ही
ऊर्जा

अमावस की
काली रात
या पूनम की
चाँदनी रात
क्रोध में प्रकाश
और अंधकार

क्रोध
ज़िन्दगी
और मौत का
ज़िन्दा सवाल
हल है तो
ज़िन्दगी,
सवाल

सवाल ही रहे तो
सवाल
मौत का सामान

क्रोध
विष का प्याला
पी जाओ
तो अमृत की
मधुशाला।

शोषण

आपदा विपदा तो
है ही सही
उपलब्धि भी है
सीख और सबक से
कि आपदा क्यों
और कैसे आई

अचानक नहीं
आभास कराती है
चेतावनी देती है
मौका देती है
हमें संभलने का

हम अंधे गूंगे-
बहरे हो जाते हैं
स्वार्थ में प्रकृति के
शोषण के दोहन से,
मालिक होने की चाह में
गुलाम हो जाते हैं

नाजायज़ भी
जायज़ परिभाषित

अपने हक में,
सुख-सुविधा
हमारा अधिकार
बिना कर्तव्य के,
अधिकारों में
कर्तव्य नहीं
तो विनाश से
अतिक्रमण
अराजकता
और अपराध

आपदा प्रबंधन
सेवा नहीं मेवा है
सूखे में पानी से
बाढ़ में सूखे से
समान अवसर
हर हाल में कमाना,
आँधी-तूफ़ान
और भूकंप में भी
वतन उजड़ने से
अपना घर बसाना

आराम भी हराम
रात में भी दिन
नहीं चैन और सुकून,
इच्छायें अनन्त
जिनका नहीं अंत
सुखी सिर्फ़ संत,

खान-पान
रहन-सहन में
शैतान और हैवान
प्रकृति को जीतने में
विपदाओं से विवश
बेबस लालची इन्सान

अपने हाथों
ख़ुद ही परास्त
सदियों से परेशान
कोशिशों से हताश
परिणामों से निराश
और कर्मों से हैरान
बार-बार पुकारता
रक्षा करो मेरे भगवान।

दासता

दासता व्यवस्था नहीं
विवशता की व्यथा
दासता जाति नहीं
रोजी-रोटी की प्रथा,
सदियों से प्रचलन में
अंतहीन व्यथा की
अमर चित्र कथा में
दासता की गाथा

इस कथा के पात्र
कभी मरते नहीं
सौंप जाते हैं
अपनी ज़िम्मेदारी
और विरासत
अपने उत्तराधिकारी को
क़र्ज़ में ही जन्म लेकर
क़र्ज़ में ही मरकर
पीढ़ियों से चली आ रही
बंधुआ मज़दूरी की प्रथा को

वस्तु की तरह
सस्ता बिकाउ

दास का जीवन
सिर्फ़ ज़िन्दा रहने की
बेबसी में गिरवी
दास का जर्जर बदन
ख़स्ताहाल झोंपड़ी में
दास का अपशकुन जन्म
तंगहाली के जीवन में
रोजमर्रा की ज़रूरतों से
तिरस्कार से मरण

दासता में दायित्व
जो अधिकार से बड़ा,
दास का जीवन
दायित्व बोध, बोझा नहीं
नैतिक चरित्र, पतन नहीं
काम में मगन, गबन नहीं
आदेश का पालन, आज्ञा नहीं
कानों से सुनवाई, ज़ुबान की नहीं
लोकतंत्र में बहुमत, सरकार नहीं
मतदाता है मताधिकार नहीं
त्यौहार है उत्साह-उमंग नहीं
कर्ता क्रिया कर्म, व्याकरण नहीं

दास का जीवन
भूख है रोटी नहीं
प्यास है पानी नहीं
तन है थकान नहीं
मन है मनमर्ज़ी नहीं

विरह है वेदना नहीं
विवश है विवेक नहीं
तिरस्कार है सत्कार नहीं
सावन है फुहार नहीं
बसंत है बहार नहीं
ज़ुबान है आवाज़ नहीं
शब्द है स्वर ध्वनि नहीं

कर्मचारी नियोक्ता का दास
व्यापारी ग्राहकों का दास
कलाकार दर्शकों का दास
स्वाभिमान सम्मान का दास
भक्त और भगवान
एक-दूसरे के दास
वैसे तो हम सब दास
कोई नशे का, कोई स्वाद का
कोई सुन्दरता का,कोई बदन का
कोई रिश्तों का, कोई चाहत का
कोई जज़्बात का,कोई धर्म का
कोई जाति का, कोई मस्ती का
कोई परम्पराओं में रिवाजों का
कोई सभ्यताओं में संस्कारों का

ग़रीब तो दास होता ही है
अमीरी तो दासता की ही
प्रतीक और पहचान है
प्रजा ही दास नहीं होती
राजे-महाराजे भी दास होते हैं

पहले हम मुगलों के दास
फिर गोरे अंग्रेजों के दास
अब ख़ुद अपनी चुनी हुई
सरकार में काले अंग्रेजों के दास
प्रकृति का प्रकोप हो तो
बेबस होकर प्रकृति के दास।

वृक्ष में जीवन

पतझड़ के
छाया विहीन वृक्ष
फागुन, बसंत, सावन के
मौसम में फिर से
हरे-भरे हो जाते हैं

ज़िन्दगी में
उतार-चढ़ाव
गर्दिश में सितारे
अच्छे-बुरे दिन
आते-जाते रहते हैं
समय के
अनुकूल होने पर
क़िस्मत के सितारे
कामयाबी की
बुलंदी को छूकर
आसमान में फिर से
चमकने लगते हैं

कुछ जवान वृक्ष
रोग से सूख जाते हैं
कुछ बिना पानी

और रोशनी के
अल्प विकसित
कुछ दीमक से
खोखले हो जाते हैं
कुछ हरे-भरे वृक्ष
फलों से लदे होने के
बावजूद भी
काट दिये जाते हैं

जवान ज़िन्दगी भी
अकस्मात बीमार
अभावों से ग्रस्त
स्वार्थों से त्रस्त
भाग्य चक्र से निराश
परम्पराओं से हैरान
सरकारी रवैये से हताश
सामाजिक तंत्र से परास्त
अराजकता में परेशानी से
ख़ुदकुशी को प्राप्त
कभी अनहोनी की
अकस्मात् घटनाओं से
दुर्घटनाओं का शिकार
बेवक़्त ख़त्म हो जाती है

उम्र दराज
वृक्षों को तो
एक दिन सूखकर
छाया विहीन होना ही हैं

नये वृक्षों को
उत्पन्न होने का
स्थान देने के लिये

ज़िन्दगी का सफ़र भी
एक न एक दिन तो
समाप्त होता ही है
नई ज़िन्दगी के
शुभारम्भ के लिये।

पराजित वीर

जो लड़ा ही नहीं
या पीठ दिखाकर भागा
या फिर उसने
आत्म समर्पण कर दिया,
जिसने सम्मान पाया
स्वाभिमान खोकर
अपमान का विष पीकर,
वो क्यों, कैसे और कहाँ
रण में एक शूरवीर योद्धा

जो युद्ध में लड़कर
परास्त या वीरगति को
प्राप्त हो गया शान से
असल में वो ही योद्धा,
हारना और मरना ज़रूरी नहीं
जीतना भी ज़रूरी नहीं
ज़रूरी है तो सिर्फ़ लड़ना
शक्ति, सामर्थ्य, और क्षमता से
वीरता दिखाने के लिये
भले ही परिणाम
कुछ भी क्यों नहीं हो

पराजय और वीरगति
वीरता से ऐसी हो कि
दुश्मन का भी गुणगान
पराजय का भी सम्मान
ऐसी हार वीरों का गौरव
वीर के रण कौशल पर गर्व
बलिदान दिवस पावन पर्व
वीरगति को प्राप्त वीर के
माता-पिता, संतान, परिजन
और विधवा होना भी
गर्व और गौरव से सम्मान

किसी के अधीन भी
पराधीन गुलाम ही है
पराधीन के सर पर
अधीनता का ताज
परतंत्र है स्वतन्त्र नहीं
गिरवी या बेचान है
अपने मान-सम्मान का,
अपमान से जीना भी
क्या कोई जीना है
मरना बेहतर है
जलालत के जीवन से

लड़ते हुये
हुई पराजय
लड़ते-लड़ते
कभी न कभी तो

जीत हो सकती है,
जिसने समझौता करा
वो तो हमेशा पराधीन
अधीन को अधिकार नहीं
मोहताज है दाने-दाने को,
जीत हो या हार
गुणगान बहादुरी का
अधीन का गुणगान तो
समर्पण से कदापि नहीं,

जीत या हार दोनों में से
एक तो निश्चित
जीत और हार तो
होती ही रहेगी,
एक न दिन
कोशिशें ज़रूर कामयाब
आत्म समर्पण में तो
यह अवसर है ही नहीं
अधीन तो हमेशा ही
पराधीन और पराजित

आत्म समर्पण
एक बदनुमा दाग
बहादुरी से पराजय
गौरवमय इतिहास
पराजय और संघर्ष
सीख और सबक
भविष्य में जीत के लिये।

नादान इन्सान

किसके लिये
इतना मगरूर
उसके लिये
क्यों इतना गरूर
दौलत कमाने में
इतना मज़बूर
कि ख़ास अपने
रिश्तों से भी दूर,
दौलतमंद से लाख गुना
बहुत बेहतर है
मेहनतकश मज़दूर
जिसे रहता है
घर और परिवार की
देखभाल, मौज-मस्ती
और ख़ुशियों का सुरूर
खरबपति नहीं है
ज़माने में अजर-अमर
संत और फ़क़ीर ही
ज़माने में रहते हैं मशहूर

दो वक़्त की
रूखी और सूखी

रोजी-रोटी के लिये
जायज़ है अपनों से दूरी,
बेहिसाब दौलत की
नाजायज़ चाहत से
अपनों से बेरहम जुदाई में
नादानियों से अत्याचारी

जब यहीं पर ही
सब कुछ छोड़कर जाना
फिर क्यों दौलत से
बेकार घर भरना,
सबसे प्यारा
होता है देश अपना
परदेश में तो
रोना ही रोना,
चैन और सुकून के
बिना कैसे ख़ुश रहना
भले ही पास में
क्यों नहीं हो जाये
कितना ही बेहिसाब सोना

ख़ुदगर्ज़ी की
यह दुनिया
और मतलब का
यह इन्सान
स्वार्थ सिद्धि में
पूजता भगवान
ऐसा नालायक

और नादान इन्सान,
मेरा और तेरा
सारी ज़िन्दगी
यही करते रहना
और एक दिन सब कुछ
यहीं पर ही रह जाना।

रुपये के रूप : एक

मंदिर में दो तो चढ़ावा
स्कूल में जमा तो ज्ञान
शादी में माँग तो दहेज़
तलाक़ में गुज़ारा भत्ता
उधार में दो तो क़र्ज़
उधार में लो तो ऋण
अदालत में भरो तो जुर्माना
भूख में पापी पेट का सवाल
प्यास में दो बूंद अमृत
रोजगार में दो वक़्त की रोटी
तिजोरियों में लालच
मोह में माया का बंधन
सरकार लेती है तो कर
सेवा निवृति में पेंशन
अपहरण में दो तो फ़िरौती

होटल की सेवा में 'टिप'
कर्मचारी को दो तो वेतन
ख़ून-पसीने में मज़दूरी
अवैध रूप से लो तो रिश्वत
अवैध रूप से दो तो हफ़्ता
उपहार में प्रेम से दो तो भेंट

रिवाज में दो तो ज़िम्मेदारी
पत्नी को दो तो घर खर्च
बैंक में जमा भविष्य की चिंता
बूंद-बूंद से सागर में बचत
ब्यूटी पार्लर में सौन्दर्य
यात्रा में पर्यटन और तीर्थ

रोग में उपचार
महफ़िल में रौनक
व्यापार में लेनदेन
लाज-शर्म में वस्त्र
पालन में कर्तव्य
आदेश में अधिकार
पायल में झंकार
कलाकार में कला
सलाहकार में सलाह
आभूषणों में कुंदन
जवाहरात में हीरा
मधुशाला में मदिरा
रिश्तों में सम्बंध
अदालत में इन्साफ़

इस तरह से
मैं हर इन्सान के
जीवन में
किसी न किसी
रूप में दर्ज़ हूँ
परिस्थितियों

और समय से
मेरा रूप
बदलता रहता है

हे पार्थ!
मैं रुपया हूँ
मैं कहाँ नहीं हूँ
मैं सर्वव्यापी हूँ
मैं सर्व शक्तिमान हूँ
जो ख़ुदा तो नहीं
मगर ख़ुदा से
कम भी नहीं हूँ
सब मुझ में ही है
मैं ही सब में समाहित हूँ
मैं वो केंद्र बिंदु की दुरी हूँ
जिसके चारों ओर
समस्त अर्थ जगत
चक्कर लगाता रहता है।

रुपये के रूप : दो

मैं रुपया हूँ
आप मुझे
मरने के बाद
किसी भी रूप में
ऊपर नहीं ले जा सकते
मगर जीते जी
मैं आपको बहुत ऊपर
ले जा सकता हूँ

मैं रुपया हूँ
मुझे पसंद करो
सिर्फ़ इस हद तक
कि लोग आपको
नापसंद नहीं करने लगे

मैं रुपया हूँ
मैं नमक की तरह हूँ
जो ज़रूरी तो है
मगर ज़रूरत से
ज़्यादा हो तो
ज़िन्दगी का स्वाद
बिगाड़ देता हूँ

मैं रुपया हूँ
इतिहास में ऐसे
कई उदाहरण
तुम्हें मिल जायेंगे
जिनके पास
मैं बेशुमार था
फिर भी
आख़री वक़्त में
उनके कोई भी
काम नहीं आया
क्योंकि वो
फिर भी मरे
यहाँ तक कि
बहुतों के लिये
कोई भी रोने
वाला भी नहीं था

मैं रुपया हूँ
वैसे तो मैं
कुछ भी नहीं हूँ
मगर मैं
निर्धारित करता हूँ
कि लोग आपको
कितनी इज़्ज़त देते हैं

मैं रुपया हूँ
मैं आपके पास हूँ
तो आपका हूँ

आपके पास नहीं हूँ
तो आपका नहीं हूँ
मगर मैं आपके पास हूँ
तो सब आपके हैं

मैं रुपया हूँ
मैं ख़ुदगर्ज़ी में
मैं नये रिश्ते बनता हूँ
मगर लोभ-लालच में
असली और पुराने
रिश्ते बिगाड़ देता हूँ

मैं रुपया हूँ
मैं मोहमाया में
सारे फ़साद की जड़ हूँ
भाई-भाई को
ख़ून का प्यासा
अज़ीज़ दोस्तों को
दुश्मन बनाता हूँ।

मानसिक उत्पीड़न

किसी भी विषय की
ऐसी-ऐसी विवेचना
और समालोचना
या यूँ कहें की
सशक्त आलोचनायें भी
शर्म-शर्म से
पानी-पानी हो जाये
किसी भी बुद्धिमान का
सर चकरा जाये

रग-रग में
आलोचना
रोम-रोम में
आलोचना
दिलो-दिमाग में
आलोचना,
आलोचना ही
उनका मर्म
यह मर्म ही
उनका धर्म
धर्म के मूल में
आलोचना ही कर्म

इसकी आलोचना
उसकी आलोचना
उनके श्री मुख से
किसकी नहीं आलोचना
जो भी उनके
हत्थे चढ़ जाये
उसकी ही आलोचना,
आलोचना भी
ऐसी वैसी नहीं
वो भी एक आध घंटा
और सिर्फ़ एक तरफा
यानी सिर्फ़ वो बोले
बाकि सब सिर्फ़ सुने

कुतर्क में भी
ऐसे-ऐसे तर्क
अपने ज्ञान का
ऐसा बोद्धिक बखान
अपनी बुद्धि का
ऐसा महिमा मंडन
बाल की खाल
निकालने के समान
दिमाग का दही
हो जाये बुद्धिमान
आस्थाओं में
तर्क का नहीं स्थान
आस्थायें तो
सिर्फ़ भावना प्रदान

आलोचनायें
अपने देश-धर्म
रहन-सहन, खान-पान
रीति और रिवाजों
सभ्यता और संस्कार
समाज और जाति
कला और विज्ञान
कानून और न्याय
शासन और प्रशासन
ऐसा कोई भी
विषय नहीं अछूता
जिसकी नहीं आलोचना

क्या ऐसी विवेचना
आलोचना और समालोचना
मानसिक उत्पीड़न
और छेड़खानी से
बौद्धिक बलात्कार तो नहीं।

वरदान

आशीर्वाद पूजा का
प्रसाद नहीं
कि जिसने भी
प्रणाम किया
उसे ही मिल गया
योग्यता होनी चाहिये
लेने वाले पात्र में
सामर्थ्य होना चाहिये
देने वाले हाथ में
वर्ना अर्थ के अनर्थ से
अराजकता निश्चित है,
अयोग्य अधर्मी दुर्योधन को
बार-बार माँगकर
विवश करने पर भी
स्वयं अपनी माँ से भी
विजय का आशीर्वाद नहीं

सिर्फ़ आशीर्वाद ही
पर्याप्त नहीं
कर्म ही ज़रूरी
कुछ भी पाने के लिये,
कर्म हीन नर

कुछ पावत नाहीं
वैसे भी कर्म हीन
भक्ति में
कोई शक्ति नहीं

आशीर्वाद
और वरदान
कोई दान नहीं,
साधक की त्याग
और तपस्या के
तप का परिणाम,
या फिर
प्रसन्नता
और मज़बूरी
देने वाले की

साधक की तपस्या में
मनोकामना में स्वार्थ
तो साधक को वरदान
जगत के लिये अभिशाप
जैसे राक्षसों को वरदान,
साधक की साधना में
जनहित से लोक कल्याण
तो प्राप्त वरदान
एक अमूल्य धरोहर
समाज के उत्थान में
जैसे गंगा का स्वर्ग से
धरती पर अवतरण।

माँ की महिमा : एक

फूलों के पराग कणों में
मधुर का शहद का प्रवास
माँ की निर्मल ममता में
ऐसे पवित्र प्रेम की मिठास

अनगिनत नदियों से
निर्मल पानी की रवानी
माँ, करुणा के सागर की
ऐसी विशाल–गहरी निशानी

नील गगन के फलक का
जितना विशाल विस्तार
माँ के आँचल में स्नेह का
बेहिसाब और भरपूर संसार

सतरंगी फूलों से
महकता गुलशन बेशुमार
माँ के पवित्र प्रेम से
आँगन ऐसा गुलज़ार

हिमालय की गगन चुम्बी
पर्वत शृंखलाओं का विस्तार

माँ के आशीर्वाद की शक्ति में
ऐसी सुरक्षा कवच की दीवार

जीव मात्र के तन में
जैसे प्राणों का संविधान
वैसे ही माँ की दुआओं में
हमेशा ख़ुशहाल संतान

प्रकृति के कण-कण में
जैसे ईश्वर का निवास
माँ की आस्थाओं में
सन्तान हित का विश्वास

प्रकृति में समीर का
सर्वव्यापी संचार से प्रवास
माँ के दिली जज़्बात में
हमेशा संतान का अहसास

अन्नपूर्णा देवी का ही
माँ के रूप में साकार
माँ के हाथों में बरकत से
साधन-सम्पन्न परिवार

कुबेर के ख़ज़ाने जितना
अनमोल धन का भण्डार
माँ के प्रेम और प्यार में
वात्सल्य का ऐसा दुलार

इसलिये हे! माँ
निर्मल और पवित्र
भावनाओं के साथ
ममता और करुणा की
महिमा और महानता के
साकार दैवीय रूप को
सत-सत नमन
और सादर प्रणाम
साआदर और सत्कार
अभिनन्दन और अभिवादन
हे! माँ तुझे सलाम
वन्दे मातरम् वन्दे मातरम्
माँ भारती की जय हो।

माँ की महिमा : दो

सावन और बसंत की
शीतल और मधुर बहार
माँ के दामन में आबाद
सारा का सारा संसार

रिमझिम बारिश से
फागुन मास की फुहार
माँ के आँचल में ही
चैन और सुक़ून का सार

दुख, दर्द और ग़मों की
तूफ़ानी लहरों में परिवार
घर की कश्ती पार लगाती
माँ के हौसलों की पतवार

गीत, ग़ज़ल, संगीत, नृत्य में
मधुर साज वीणा और सितार
त्यौहारों में उत्साह का आनंद
माँ के पैरों में पायल की झंकार

रक्त दान और नेत्र दान
अंग दान और देह दान

इन सबमें जीवन का दान
जिसनें भी किया ऐसा महादान
सारे के सारे संसार पर
उसका अनमोल अहसान
वैसे ही नौ महीने कोख में
अपने अस्थि-मंजा के
पोषण से पालकर
संतान के शरीर में
माँ के अंश का देहदान

भाषा कोई सी भी हो
हर भाषा में कर्ता, क्रिया
कर्म और विशेषण होकर
व्याकरण तुम ही हो माँ

प्यास किसी की भी क्यों नहीं
पानी में सिर्फ़ तुम ही हो माँ
भूख किसी की भी क्यों नहीं
रोटी में सिर्फ़ तुम ही हो माँ

सभ्यतायें कोई सी भी क्यों नहीं
संस्कृति में सिर्फ़ तुम ही हो माँ
रीति-रिवाज कोई से भी क्यों नहीं
संस्कारों में सिर्फ़ तुम ही हो माँ

इस संसार में
शेष भी तुम ही माँ
अवशेष भी तुम ही माँ

और विशेष भी
तुम ही हो माँ

माँ तुम क्या नहीं हो
बहुत कुछ इतना हो कि
सब कुछ शब्दों में
ज़ुबान से बयान नहीं
पंच तत्वों से बना समस्त
अखण्ड ब्रह्माण्ड तुम ही हो

आदि-अनादि काल से
धन, ज्ञान और शक्ति के
निर्विवाद साकार रूप से
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् में
सारे के सारे संसार को
सिर्फ़ तुम ही स्वीकार हो माँ

इसलिये हे! माँ
निर्मल और पवित्र भावनाओं के साथ
ममता और करुणा की
महिमा और महानता के
साकार दैवीय रूप को
सत-सत नमन और सादर प्रणाम
साआदर और सत्कार
अभिनन्दन और अभिवादन
हे! माँ तुझे सलाम
वन्दे मातरम् वन्दे मातरम्
माँ भारती की जय हो।

स्वयं से ही प्रश्न : एक

हम सब ने
मन चाहे तरह से
टी. वी. पर चैनल देखे
अख़बार में खबरें पढ़ी
किताबों में रचनायें पढ़ी
गोष्ठियों-सभाओं में भाग लिया
सिनेमा हाल में फ़िल्म देखी
व्हाटसेप और फेसबुक को देखा
रेडियो का प्रसारण सुना
क्या सीखा और समझा हमने

इन सब में
वक़्त गुज़ारा हमने
नसीहत किसी को भी नहीं
स्वयं अपने आप से ही प्रश्न
क्या अनमोल समय का
सदुपयोग किया हम सबने

हम सबने
मन चाहे तरह से
यात्रा में पर्यटन किया
क्या यात्रा में ऊर्जा

ऊष्मा, उत्साह, उमंग
और ताज़गी का अनुभव
प्राप्त किया हम सबने
क्या पर्यटन क्षेत्र के
रीति और रिवाज
सभ्यता और संस्कृति
रहन-सहन और खान-पान
और भौगोलिक स्थिति की
जानकारी प्राप्त की हमने

इन सब में
वक़्त गुज़ारा हमने
नसीहत किसी को भी नहीं
स्वयं अपने आप से ही प्रश्न
क्या अनमोल समय का
सदुपयोग किया हम सबने।

स्वयं से ही प्रश्न : दो

हम सबने
मन चाहे तरह से
यात्रा में तीर्थाटन किया
क्या हम सबने धर्म, सत्य
अध्यात्म, मोक्ष, तप, त्याग
तपस्या, दान-पुण्य, अनुराग
इंसानियत, भाईचारा, दुआ
और ईश्वर को पाया हमनें

इन सब में
वक़्त गुज़ारा हमने
नसीहत किसी को भी नहीं
स्वयं अपने आप से ही प्रश्न
क्या अनमोल समय का
सदुपयोग किया हम सबने

हम सब नें
मन चाहे तरह से
खाना बनाया और खाया
क्या खाना मन से बनाया
क्या खाना स्वादिष्ट
और तन-मन से पोष्टिक था

क्या खाना ठीक तरह से
बैठकर और चबाकर
मन से खाया हम सबने

इन सब में
वक़्त गुज़ारा हमने
नसीहत किसी को भी नहीं
स्वयं अपने आप से ही प्रश्न
क्या अनमोल समय का
सदुपयोग किया हम सबने।

दोष

मुझमें दोष
तुझमें दोष
उसमें दोष
हर किसी में
कोई न कोई दोष
अपने दोषों को
समझते सब हैं
स्वीकारता कोई नहीं
सब दूसरों का
गिरेबान पकड़ते हैं
अपने गिरेबान में
झाँकता कोई नहीं
आईने में चेहरा
सबके सब देखते हैं
मन से सँवरता कोई नहीं

जो मेरी नज़र में दोष
हो सकता है कि
उसकी नज़र में
वो दोष ही नहीं हो
हो सकता है कि
दोष का यह नज़रिया

यह मेरा महज भ्रम हो
मगर कुछ दोष तो
संसार में सर्व मान्य
उनसे कैसे इंकार करोगे
करोगे तो मूर्खता से
अपने हाथों अपने को ही
तन-मन से बर्बाद करोगे

कोई अपना ही
आपके दोष बतायेगा
वर्ना किसी को क्या मतलब
जो अपना तन मन धन
और समय ख़राब करेगा
अगर करेगा तो भी
एक सीमा तक ही
जब पानी सर के
ऊपर से गुज़र जायेगा
तब समझने और समझाने वाला
दोनों ज़रूर डूबेंगे
एक न एक दिन

अपने अनुभव से
सीख और सबक लेकर
सुधार जायें तो बेहतर
दूसरों की सलाह से
सुधर जायें तो भी बेहतर
दूसरों को देखकर
सुधर जायें और भी बेहतर

मूर्ख को समझाना तो आसान
नादान को समझाना भी मुमकिन
नालायक को समझाना तो मुश्किल
बुद्धिमान को समझाना तो नामुमकिन।

संस्कृति

नहीं कोई भी
आदर और सत्कार
तब भी कोई बात नहीं
मगर उनका ही
बदज़ुबानी और बदगुमानी से
अनादर और तिरस्कार
जो हमारे पालनहार
फिर तो रोज-रोज
तौहीन और जलालत में
मर-मरकर ज़िन्दा रहने से
ख़ुदकुशी ही बेहतर उपचार
उनके थोड़े से पर
क्या निकल आये कि
जाने क्या समझकर
करते हैं बुरा व्यवहार
ऐसे अहसान फ़रामोश पर
लानत और धिक्कार

जो कुछ भी हमने दिया
वो ही लौटकर आयेगा
यक़ीनन हमें कर्मों का
फल ज़रूर मिलेगा

अनादर और तिरस्कार
क्या हमारे दिये हुये
संस्कार ही तो नहीं हैं
जैसा बोओगे वैसा काटोगे
जैसा दिखाओगे वैसा देखोगे
जैसा सुनाओगे वैसा सुनोगे
जैसा बताओगे वैसा जानोगे
जैसा समझाओगे वैसा समझोगे
यही तो शाश्वत सत्य है
फिर कैसा अफ़सोस और तिरस्कार

ऐसा नहीं है कि
सब कुछ हम ही
बताते, सुनाते, दिखाते
और समझाते हैं
वो ख़ुद भी तो बुद्धिमान हैं
उनके दिलो-दिमाग और आँखों में
सारा का सारा जहान है
कोई भी अपने पैरों पर
कुल्हाड़ी नहीं मारता
यक़ीनन कहीं न कहीं तो
ज़रूर कुछ ग़लत है

कौन अपना बुरा चाहता है
कोई भी सलाह देता है
अपनों की भलाई के लिये,
यह उम्र का ही तकाजा है
छोटों को बड़ों की

सलाह बुरी लगती हैं
जब अपने पर गुज़रती है तो
वो ही सलाह अच्छी लगती है

अनादर और तिरस्कार तो
समझदार का संस्कार नहीं
चाहे कितना भी बुरा क्यों नहीं हो
इस लायक तो पालनहार नहीं
सभ्यता और संस्कृति
जीवन नैया की पतवार
बदज़ुबानी से मझधार नहीं

अतीत ही वर्तमान है
वर्तमान ही भविष्य होगा
इस सीख और सबक में ही
आदर और सत्कार
ऐसी समझदारी से
सभ्य घर और परिवार।

गृहस्थ जीवन

गृहस्थी के
हवन कुण्ड में
अर्थ और काम की
हवन सामग्री का
विचारों की अग्नि से
कर्म की ज्वाला में
पुरुषार्थ की आहुति
जैसी हवन सामग्री
वैसी ही गृहस्थी में
ऊर्जा और सुगंध

गृहस्थी के
पुरुषार्थ में ही
मोह या मोक्ष
मोह के बंधन में
जीवन एक जेल
मोक्ष के मार्ग से
जीवन में संतोष से
परम आनन्द का
चैन और सुकून

गृहस्थी के
पुरुषार्थ में ही
सम्मान और अपमान
धनवान को अफ़सोस
यहीं पर ही रह गया
उसका सारा सामान
लालची इन्सान
कितना नादान
कोई भी नहीं
यहाँ पर मेजबान
सब के सब मेहमान
रेशम का कीट
जीवन भर बनाता रहा
अपनी मौत का मकान

गृहस्थ जीवन
मृग तृष्णा की
एक लुभावनी दुकान
यहाँ पर हर तरीके का
हर तरह से बिकने
और ख़रीदने का सामान
किसने कैसे और क्या ख़रीदा
किसने क्यूँ और क्या बेचा
जीवन में वैसा ही
उसका नफ़ा और नुकसान

गृहस्थ जीवन
एक विश्वास

जिस झूठ पर
यक़ीन आ जाये
वही तो सत्य
सच के सुबूत
चीख-चीखकर भी
गवाही दे तो भी
बिना यक़ीन के
सच, सच नहीं है
सच और झूठ
महत्वपूर्ण नहीं
महत्वपूर्ण है यक़ीन।

यह कैसा डर : एक

हवा, नदियाँ, सागर
और आसमान साफ़
कोरोना के डर से
महामारी के साये में
इन्सान घरों में कैद,
क्या इन्सान ही
प्रदूषित और गन्दा
यह कैसा गोरख धंधा

कोरोना की
महामारी से
बीमारी ने
बीमार प्रकृति का
कर दिया उपचार,
ज़हर ही तो
ज़हर का
इलाज होता है
लोहा ही तो
लोहे को काटता है
डर की दवाई से
यह कैसा उपचार

कोरोना की
महामारी में
बीमारी के डर से
खान-पान
रहन-सहन
बदल गया
दूसरी बीमारियाँ
ख़त्म हो गई,
डर के मारे तो
भूत भी भागता है
भला बीमारी
क्या बला है,
डर के साये में
इन्सान कैसा बीमार

कोरोना की
महामारी में
बीमारी के डर से
हवा साफ़ है
मुहँ पर मास्क है
यह कैसी विसंगति है
वीरान सड़कों पर
खड़े तेज वाहन हैं
यह कैसी गति है

कोरोना की
महामारी में
बीमारी के डर से

परिजनों के होते
नहीं अंतिम संस्कार
पार्थिव देह की
यह कैसी दुर्गति है।

यह कैसा डर : दो

प्रकृति का
शाश्वत नियम
रात के बाद
दिन का प्रकाश,
कोरोना के डर से
दिन में भी
सुनसान वीराने का
घना अंधकार
यह कैसा प्रकाश है

दो वक़्त की
रुखी-सूखी
रोजी-रोटी में
मेहनतकश मज़दूर
रहमो-करम पर
ज़िन्दा रहने के लिये
सिर्फ़ ज़िन्दा,
कोरोना के डर से
ख़ून-पसीने से
दीनो-ईमान की
जायज़ कमाई में
यह कैसी मज़दूरी है

खिलते फूलों से
गुलशन गुलज़ार,
सुन्दर और रमणिक
पर्यटन और तीर्थ स्थल
कोरोना के डर से
बेरौनक और सुनसान
हसीन क़ुदरत का
यह कैसा नज़ारा है

बेशुमार धनवान
बिकने को सामान
खरीदने को बेताब
और लालायित इन्सान
कोरोना के डर से
मगर दुकाने बन्द
यह कैसा अज़ीब बाज़ार है

सामान्य परिचित तो
बहुत दूर की बात
घर में ही परिजन
कोरोना के डर से
ऐसे रहते जुदा-जुदा
जैसे दुश्मन और बेवफ़ा
यह कैसा परिवार है।

यह कैसा डर : तीन

मुसीबत के वक़्त
सारे के सारे
पूजा स्थल बंद
बेचारे और बेबस
दान दाता पर
यह कैसा अर्थ दण्ड,
रहमो-करम दिल
और मददगार ख़ुदा भी
क्या बेरहम दिल,
दान और भेंट का
यह कैसा प्रबंध
पुजारियों के हाथों गबन
या दान पेट में हज़म
अहसान फ़रामोश में
यह कैसा उपहार है

जो देती है
पंच तत्वों का
संतुलित भण्डार
उसके हाथों में ही
सख्त प्राकृतिक दण्ड,
प्रकृति बनी रहती है

प्राणी मात्र की
सुरक्षा प्रहरी अखण्ड,
शोषण के दोहन से
कोरोना के कोहराम में
दिखाया रूप प्रचण्ड
चूर-चूर हो गया
इन्सान का घमण्ड
स्वार्थ में मानव का
यह कैसा व्यवहार है।

यह कैसा डर : चार

मौत के मुँह में
जान की जोखिम से
बीमार का उपचार
और सुरक्षा कवच,
इंसानियत का
यह शिष्टाचार,
कर्म ही पूजा से
देवदूत के अवतार
जनमानस में
ऐसा स्वीकार,
आदर, सत्कार
और सम्मान तो नहीं
मगर कर्म वीरों
और देवदूतों पर
पत्थरों की बरसात
और गालियों के वार
यह कैसा सदाचार है

भाग बिल्ली
चूहा आया
बिल में घुस,
कोरोना के डर से

इन्सान दहशत में
घर आंतक से
मौत का साया
यह कैसा अजीब
खौफ़ज़दा संसार है।

यह कैसा डर : पाँच

कोरोना के कहर से
मौत ऐसी भयानक
परिजन डर से लाचार
ना तुलसी, ना गंगा जल
ना कंधा, ना क्रिया कर्म
और ना कोई रीति रिवाज
सीधा पैकिंग और श्मशान
यह कैसा अंतिम संस्कार

खास अपने भी
पराये से दूर-दूर
बेगाने और बेजार
कोरोना के कोहराम से
बीमारी और मौत का साया
दूध पीते बच्चों को भी
नहीं प्यार और दुलार
बड़े और बुजर्गों का भी
नहीं आदर और सत्कार
यह कैसा आचार-विचार।

यह कैसा डर : छह

कबाब
शराब
और फिर शबाब
इनके पहलू में
दिन और रात
कोरोना के
कोहराम में
संक्रमण के
प्रकोप से
अब दूर से ही
इनको आदाब
हम प्याला
हम निवाला भी
अब कैसा यार

चुनाव के वक़्त तो
जनता माई-बाप
कोरोना के कहर में
हैरानी और परेशानी से
बेबस जनता है लाचार
सरकार की लापरवाही में

अराजकता और अत्याचार
चुनाव की मान-मनुहार में
जनता का यह कैसा तिरस्कार।